बीजोलिया शिलालेख का भौगोलिक परिदृश्य

*डॉ. राजमल मालव
**डॉ. उमा बड़ौलिया

शोध सारांश

बीजोलिया'उपरमाल' के प्राचीन भग्नावशेषों के मध्य स्थित है, उन अनके शिलालेखों से जो हमें प्राप्त हुए ज्ञात होजता है कि बीजोलिया का प्राचीन नाम 'अहेच्छपुर' और 'मोराकरी' था। दूसरा नाम अब भी प्रचलित है, परन्तु पहला नाम केवल शिलालेखों में ही प्रचलित मिलता है।

यहां प्राचीन काल में चौहानों का अधिकार था और ऐसा प्रतीत होता है कि, यहां के स्वामी अजमेर के अधीन थे, क्योंकि उन शिलालेखों में उस चौहान वंश के अनेक प्रसिद्ध शासकों के नामों का उल्लेख हैं। बीजोलिया को 'उपरमाल' भी कहते हैं। संस्कृत ग्रन्थों में उसको ''उत्तमाशिखर'' के नाम से भी सम्बोधित किया गया। बीजोलिया का शुद्ध नाम '' विजयावल्ली'' था, जो बिगड़कर ''बिजोल्ली'' और अंत में '' बीजोलिया'' हो गया।

बीजोलिया के पास अतिशय क्षेत्र पार्श्वनाथ मंदिर के पाय चट्टान पर एक शिलालेख उत्कीर्ण है, जिसे दिम्बर जैन श्रेण्डी लोल्लाक ने मंदिर एंव कुण्ड की स्मृति में लगाया था, जिसमें बीजोलिया का नाम '' बीतकते'' किया है, अतः तत्कालीन समय उस क्षेत्र का नाम '' बीजोलिया'' पड़ गया।

चाहमान वंश के राजा पृथ्वीराज ने भगवान पार्श्वनार्थ के लिए ''मोराकरी'' नामक ग्राम दान दिया था, अतः इस कारण इस का प्राचीन नाम''मोराकरी'' भी था, ऐसा बीजोलिया के शिलालेख से ज्ञात होता है। वास्तव में उपरमाल तत्कालीन मेवाड़ (उदयपुर) राज्य में और वर्तमान राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के एक उंचे पटारी प्रदेश का नाम है। बीजोलिया का ठिकाना उसी उपरीमाल प्रदेश में स्थित है। भीलवाड़ा से मोटर या बस द्वारा जाइये तो, जब उपरमाल की सीमा अति निकट आती है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानो हम एक साथधरा से अम्बर की ओर बढ़ रहे है।

जब यात्री उंचाई पर चड़कर पठार के चारों ओर दूर–दूर मीलों तक एक नीचा और समतल प्रदेश फैला हुआ दिखाई देता है और ऐसा प्रतीत होती है कि मानों उस विशाल विस्तृत समतल प्रदेश के मध्य उपरमाल के पठार के रूप में प्रकृति ने एक उंचा और विशाल भवन निर्मित कर दिया हो, जिस पर हम खड़ें हो और अपने चारों ओर दूर–दूर तक फैलेहुए निचले समतल प्रदेशों से पांच सौ फीट उंचा हो। पठार चौदह लाख मील लंबा और बारह मील चौड़ा है। इस कारण वह एक विस्तृत पठार की भांति बहुत बड़े क्षेत्रफल में फैला हुआ है और अपने सीमावर्ती प्रदेश से उसका धरातल और भौगोलिक बनावट भिन्न है।

इस प्रकार ''बीजोलिया'' के नाम से क्षेत्र हैः–

1. अहेच्छपुर
2. मोराकरी
3. बिजयावल्ली
4. बिजोल्ली
5. बीजोलिया
6. उपरमाल
7. उत्तमाशिखर

प्रचीन ग्रन्थों और वहां से प्राप्त शिलालेखों से इस क्षेत्र को 'बिलोली' कहा जाता था और वर्तमान में इस क्षेत्र का नाम ''बीजोलिया'' हुआ। शिलालेखों में प्राप्त ''बीजाकृते'' संस्कृत शब्द के लिए प्रयुक्त होने वाले पर्यायवाची शब्द कृते की बीज के साथ जोड़ने पर बनता है।

स्थान और क्षेत्रफलः–

इसका क्षेत्रफल कुल 168 मील है। यह राज्य के दक्षिणी–पूर्वी भाग में 25 1 से 25 58 उत्तरी अक्षांश एंव 74 1 से 75 28 पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है।

वर्तमान मार्गः–

कोटा–उदयपुर राज्य मार्ग क्र.सं09 पर कोटा से 90 किलामीटर तथा कोटासे डाबी होकर 70 किलोमीटर दूरी पर विक्रम संवत 1226 में प्रतिष्ठित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र, बीजोलिया है।

सीमाः–

बीजोलिया के पूर्व में बूंदी राज्य, उत्तर–पश्चिम में मेवाड़ राज्य का खालसा प्रदेश और दक्षिण में ब्वालियर (मध्य–प्रदेश) की सीमांए मिलती थी। अतः बीजोलिया कस्बा पूर्व में कोटा से 36 मील, पश्चिम में भीलवाड़ा (मेवाड़ राज्य)से 44 मील और नीमच (ग्वालियर) से 66 मील और पूर्व में मेवाड़ राज्य की राजस्थान ादयपुर से 112 मील दर हैं जहां तक बीजोलिया(उपरमाल) का सम्बन्ध था, वह तत्कालीन मेवाड़ा राज्य की सीमा पर स्थित था। अतः समय–समय पर शासक परिवर्तित होते रहे।

नदियांः–

यहां पर ''रेवती और कुटिला'' दो ही नदियों है, जिनमें एक पार्श्वनाथ मंदिर के समीप निकलती है तथा दूसरी मेनका मंदिर एंव शिव मंदिर के समीप निकलकर 20–25मील दर बूंदी जिले की सहायक नदी में मिल जाती है। पठारी भाग होने के कारण तथा चट्टानें होने के कारण इनका पानी केवल वर्षाकाल तक ही रहता और बाद में यह सूख जाती है। इन नदियों के जल का खेती के लिए उपयोग नहीं हो सकता है।

जिले में बहने वाली प्रमुख नदियां बनास एंव उसकी साहयक नदी बैराव, कोठारी और खारी है और अन्य छोटी मानसी, मनाली, चन्दुमाणा एंव नाकड़ी नदियों है।

बनास नदी अरावली पर्वत श्रेणियों से उदयपुर जिले के उत्तरी भाग से निकलकर भीलवाड़ा जिले में डूडियां गांव के पास प्रविष्ठ होती है। यह नदी उत्तर एंव तत्पश्चात् उत्तर–पूर्वी दिशा की ओर बीती हुई पश्चिमी क्षेत्र में जहाजपुर तहसील से निकलकर टोंक जिले में प्रवेश करती है।

पर्वतश्रेणियांः–

सारे क्षेत्र में अरावली की छोटी–छोटी श्रेणियों आ गई है जो उत्तरी–पश्चिमी भाग में विशेष और पूर्वी भाग में कम है। इन पहाड़ियों की उंचाई अधिक नहं है। समुद्र की सतह से 500 फीट उंचा हैं यहां एक अम्बाभाटी है, जो उपरमाल के पठार से निकले समतल मैदान को मिलाने वाली घाटी है। बीजोलिया से लगभग 8 मील दूर उंची–उंची पर्वत मालाओं के मध्य एक अत्यन्त गहरा और भयानक खड्डे है। यह पर्वतीय खड्डे 400 फीट गहरा है। गगनचुमबी उंचें पर्वतों के मध्य यह गहरा खडड अत्यन्त भयंकर दिखाई देता है।

जंगल :–

इस क्षेत्र का अधिकांश भाग पहाड़ियों से ढका हुआ है, जिसमें सालर आदि बड़े–बड़े और कई किस्म के छोटे–छोटे वृक्ष हैं गर्मी में जंगल सूख जाते हैं। लेकिन वर्षा के दिनों में कई किस्म की हरियाली हो जाने के कारण अकसर पहाड़ियों की सज्जा खुशनुमा दिखाई देती हैं। पश्चिम भाग में जंगल विशेष है जो तीन भागों में विभक्त हैंः–

1. गामाई– इसमें नागरिकों को घास, लकड़ी आदि आवश्यक वस्तुएं मिल जाती है।
2. रखत
3. शिकार का जंगल

यहां बड़े–बड़े वृक्षों की संख्या कम है, क्योंकि पहाड़ी भूमि होने के कारण उनकी जड़े भूमि के अन्दर अधिक नहीं जा सकती है। फिर भी सागवान, धोंक, आवला, तेंदू, खेर, सालर, बांस, गूलर, महुआ, बेहड़ा, खेजड़ा, कीकर, बबूल, शीशम, आम, इमली, बड़, पीपल, नीम, सेमल, छामण और राबर आदि वृक्ष होते थे तथा विभिन्न प्रकार की घासे भी उत्पन्न होती थी। इनमें से आम के वृक्ष खेतों पर लगाये जाते थे। सागवान, बांस, महुआ, अदि इमारती काम की लकड़ी होती थी।

जातियांः–

यहां पर सभी जातियों के लोग निवास करते हैं, किन्तु हिन्दुओं में प्रमुख जातियां ब्राह्मण, राजपूत, महाजन, कुनटा, तेली, कायस्थ, चारण, बनजारे, मोची, बजाई, भील, भाट, सुनार, दरोगा, कराड़, दर्पी, लुहार, सुथार, कुम्हार, धाकड़, माली, सरगरा, नाई, सिलावट, ढोली, धोबी, मीणा, गरासिया आदि हैं भील, मीणा व गरासिया जंगलों में रहते हैं, इसलिएइनकी गणना आदिवासी जातियों में होती है। मुसलमानों में शैख, सैयद,मुल, पठान, रंगरेज, सक्का और बोहरे आदि है, जिनके विवाह प्रायः अपने फिर्क्रों में ही होते हैं।

फसलेंः–

उपरमाल की भूमि माल की है, उसका रंग काला है, जो कि भारत का अतयन्त उर्वरा मिट्टियों में से हैं माल की मिटटी में जल को सुरक्षित रखने और उसको तेज सूर्य की धूप से भाप बनकर न उड़ने देने की अपूर्व क्षमता है। जब वर्षा होती है तो यह मिटट्ी गोंद की भांति चिपकनी और लिबलिबी हो जाती है और वर्षा के समाप्त होने पर सूर्य की तेज धूप पड़ने पर उसमें दरारे पड़ जाती है। यह फट जाती है, परन्तु जो जल उसने वर्षा के दिनों में

सोख लिया है, उसको उड़ने नहीं देती है। इस कारण माल की भूमि में बिना अधिक जल के भी अच्छी फसलें उत्पन्न होती हैं। इस प्रदेश में खरीफ एंव रबी दोनों फसलें होती हैं। खरीफ की फसल सर्वत्र होती है, जिसका आधार वर्षा का पानी है, जबकि रबी की फसल मुख्यतः कुओं, तालाबों के पानी से होती है। इस प्रदेश की भूमि 'माल' की जमीन है, जिसे असिंचित कहते हैं और जहां बिना जल पहुंचाऐं दोनों ही फसलें होती है।

जलवायुः–

साधारणतया यहां की जलवायु अच्छी नहीं की जा सकती है। पठारी प्रदेश होने के कारण जल में खनिज पदार्थ और वनस्पति का अंश मिल जाने से वह भारी होती है, जिससे वहां के निवासी मुख्यतः हृष्ट–पुष्ट एंव बलवान नहीं होते हैं। इस प्रदेश की औसतन वर्षा 24 इंच के लगभग है। वर्षा के अंत में कई लोग बीमारियों से पीड़ित हो जाते हैं।

धर्मः–

प्रचलित धर्मों मेंयहां हिन्दु और जैन प्रधान है। कुछ वर्षों से इस्लाम धर्म का भी प्रवेश हुआ है। हिन्दुओं में शिव, वैष्णव, शक्ति, और जैन आदि है। भील और मीणा हिन्दू धर्म के अनुयायी है। वे हिन्दुओं में शिव, वैष्णव, दुर्गा, भैरव, नाग आदि देवी–देवताओं को पूजते हैं। उनका विवाह संस्कारभी हिन्दुओं की भांति अग्नि को साक्षी मानकर होता हैं। जैन धर्म दो दिगम्बर और श्वेताम्बर है, उनमें भी अधिक संख्या दिगम्बर सम्प्रदाय के लोगों की हैं। मुसलमानों में भी दो भेद शिया और सुन्नीहै, दाउदी बोहरे भी शिया मत के हैं।

भाषाः–

इस प्रदेश की मुख्य भाषा मेवाड़ी है। मेवाड़ी बोली में 'ए' और 'ओ' की ध्वनि का विशेष प्रयोग होता है।

लिपिः – प्रचलित लिपि देवनागरी है, किन्तु लोग उसे लकीर खींचकर घसीट रूप मेंलिखते हैं। उसमें छठव, दीर्घ और शुद्ध की ओर ध्यान कम दिया जाता है।

वेशभूषाः–

सामान्यतः यहां के पुरूषों का मुख्य पहनावा अंगरखा अथवा बुगतरी तथा घुटनों तक बंधी होती है। सर्दियों में लोग धुधनी या पवेबड़ां का प्रयोग करते हैं। सिर पर पगड़ी व साफा जाति के अनुसार अलग–अलग तरह से बांधा जाता है। कस्बे के लोग कोट, पेन्ट, कमील, पायजामा, बुशर्ट व नेकर आदि पहलते हैं। आजकल तो यह प्रायः गावों में भी पहने जाते हैं कुछ लोग नंगा सिर रखते है। कहीं–कहीं टोपी या हैट का भी प्रचलन है। मुसलमान चूड़ीदार पायजामा और अचकन भी पहनते हैं।

स्त्रियों की पौशाक में सामान्यतः हिन्दू स्त्रियां लहंगा, या घाघरा, ओढ़नी या लूगड़ी, काचंली व अंगरखी पहनतीहै। ओढ़नी की चून्दड़ी, पीला, पोमचा, बसन्ती, लहरियो आदि उसके रंगों व बन्धेज व छपाई के अनुसार कहा जाता है। मुस्लिम स्त्रियां पायजामा पहनती है और उसके उपर ओढ़नी तथा तिलकनामक चोंगा पहनती है।

आभूषणः–

सामान्यतः स्त्री व पुरूष दोनों ही आभूषण धारण करते हैं। ग्रामीण लोग हाथों व पैरों में कड़े तथा मुरकी आदि पहनते थे। स्त्रियों के बोरला, टीका, या तिलक, रखड़ी, शीशफूल व मेमन्द आदि आभूषण सिर पहनने के लोंग, नथ, बुलाक,झाली और झडुआ, कर्णफूल या टाप्स, रास चेहरे के आभूषण, ठुस्सी, पंचलडी तिमणियां, बड़ा, हंसली, कन्ठी

या कण्ठाहार आदि गले के आभूषण, पहुंची, बाजूबन्द, गोखरू, गजरा, कांकणी, अंगूठ, करधनी आदि हाथों के आभूषण और छड़, अंगूठी, करधनी आदि हाथों के आभूषण और छड़ अंगूठी, पायजेब, टड्डा, बिछुआ आदि आभूषण पैरों में पहनने के तथा सोने एंव चांदी, हाथीदांत, पीतल, रांगे की चूड़ियां भी पहनती थी।

दर्शनीय स्थल

1. बीजोलियाः–

बीजोलिया (विजयावल्ली) उपरमाल के प्राचीन भग्नावशेषों के मध्य स्थित हैं। उन अनेक शिलालेखों से ज्ञात होता है कि बीजोलिया का प्रचीन नाम अहेच्छपुर और मोराकरी था। दूसरा नाम अब भी प्रचलित है, परन्तु पहला नाम केवल शिलालेखों में ही मिलता हैं।

यहां प्राचीन काल में चौहानों का अधिकार था और ऐसा प्रतीत होता है कि, यहां के स्वामी अजमेर के अधीन थे क्योंकि शिलालेख में उस चौहान वंश के अनेक प्रसिद्ध शासकों के नाम का उल्लेख है। उदाहरण के लिए बीसलदेव, सोमेश्वर, पृथ्वीराज आदि। शिलालेखों में मोराकरी (बीजोलिया) के इरनोराज (अर्णोराज) की वीरता और धार्मिकता का विशद वर्णन किया गया है और उसके वंशधर बहिराज तथा कुन्तपाल के शौर्य का भी वर्ण है, जो कि अपने अधीश्वर और दिल्ली और अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे।

एक शिलालेख में चित्तौड़ के शासक पृथ्वीराज चौहान के कार्यों का भी विशद वर्णन है और चौहानों तथा गहलोतों के नाम भी उसमें मिले हुए हैं। यहां पृथ्वीराज ने पार्श्वनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया तथा एक कुण्ड का निर्माण करवाया जो दर्शनीय है।

मोराकरीः–

मोराकरी जो बीजोलिया के पूर्व में लगभग आधे मील दूर पर स्थित है। जो आजकल नितान्त विध्वंस की स्थिति में है, परन्तु वहां अब भी एक महल तथा कोट के भग्नावशेष है तथा नौचोकी के अवशेष है, जो प्राचीन संस्कृति का ज्ञान कराते हैं, दर्शनीय स्थल है।

पार्श्वनाथ का मंदिरः–

बीजोलिया से एक मील दूर पार्श्वनाथ का मंदिर स्थित है, जहां दो चट्टानों में से एक चट्टान पर वि.सं. 1226, फाल्गुन बुदी तील, का चौहान राजा सोमेश्वर के समय का बड़ा शिलालेख है, जो 15 फीट लम्बा और 5 फीट लम्बा और 5 फीट चौड़ा है और जिसमें 52 पंक्तियां है। दूसरा शिलालेख 11 फीट लम्बा और 3 फीट चौड़ा है उसमें 31 पंक्तियां हैं।

यह शिलालेख भी वि.सं01226 का है और उस पर उन्नत शिखर पुराणा नामक ग्रन्थ खुदा हुआ है। यह दोनों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं इसका कुछ स्थानों पर नाम उन्नत शिखर भी मिलता है।

मंदिर परिसर में स्थित शिलालेख के आधार पर क्षेत्र परिचय इस लेख में प्रस्तुत किया गया है, ऐसा विश्वास है कि वर्तमान मंदिर (जिसका गर्भगृह 7 फुट 2 इंच लम्बा तथा 7 फुट 1 इंच चौड़ा तथा 6 फुट 7 इंच उंचा बना है) के नीचे भूगर्भगृह में प्राचीन प्रतिमाएं सुरक्षित रूप से विराजमान है।

वर्तमान में इस तीर्थ क्षेत्र पर एक विशाल चौबीसी मंदिर व एक मध्य समोशरण मंदिर तथा मानस्तम्भ निर्माणाधीन है। यहां प्रतिवर्ष मेला भी लगता है और यहां प्रतिवर्ष हजारों दर्शनार्थी आते हैं और जैनियों का प्रमुख तीर्थ स्थल

दर्शनीय स्थल है। पार्श्वनाथ के भग्नावशेषों मं से होकर मंदाकिनी नदी बहती है और एक सुन्दर कुण्ड भी है।

मंदाकिनी मंदिर तथा शिव मंदिरः–

बीजोलिया के पूर्व की ओर तीन विशाल शिव मंदिर तथा एक मंदाकिनी देवी का मंदिर स्थित है। इसमें कोई शिलालेख नहीं है, जो गुहिल राज '' राहिल'' की धार्मिकता का बखान करता है और उसके द्वारा आंतरी में कुछ भूमि दान करने का उल्लेख है तथा उसमें यह भी खुदा हुआ है कि जो भी खेती कुण्ड में स्नान करेगा, वह भगवान् का प्रिय होगा और उसकी वंश वृद्धि होगी। वहां के शिव मंदिर में अनेक देवी–देवताओं की दुर्लभ मूर्तियां लगी हुई है, जो अत्यन्त दर्शनीय है।

यहां पर आषाड़ की चतुर्दशी पर शिव का मेला भी लगता है। यहां उस दिन सैकड़ों व्यक्ति कुण्ड में स्नान करते है। अतः शिव मंदिर एंव मंदिाकिनी देवी का मंदिर भी दर्शनीव है।

तलस्वां (तिलसुहा):–

बीजोलिया से जो लगभग 6 मील दक्षिण में है, वहां पर चार शिव मंदिर एंव एक कुण्ड स्थित हैं यह बिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थल है। यहां आषाढ़ की चतुर्दशी को विशाल मेला लगता है और हजारों यात्री कुण्ड में स्नान करते है तथा शिव की पूजा करते है। इसलिए यह हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थल होने के कारण दर्शनीय है। बीजोलिया में लगभग 4 मील दूर दक्षिण दोरोवली नामक स्थान है, जहांपर वि0स0 900 (844 ईस्वी) का एक विशाल शिलालेख है।

अम्बाभाटीः–

जो उपरमाल के पठार से निकले समतल मैदान को मिलाने वाली घाटी है, वहां पर भी एक प्राचीन कुण्ड तथा विशाल प्राचीन मंदिर के भग्नावशेष हैं। जो प्राचीन देवी–देवता की मूर्तियों से निर्मित था।

मेनालः–

बीजोलिया से लगभग 8 मील दूर प्रसिद्ध (महानाल) है, जो एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ओर धार्मिक स्थान है। यहां उची पर्वतमालाओं के मध्य एक अत्यन्त गहरा और भयानक खड्ड है। यह पर्वतीय खड्ड 400 फीट गहरा है। गगनस्पर्शी पर्वतों के मध्य यह गहरा खड्ड अत्यन्त भयंकर दिखलाई पड़ता है।

उपर से खड़े होकर झांकरने से मन में भय का संचार होता है। इसमें पर्वत से बहकर आई हुई जलधारा **भीम वेग** से गिरती हैं, तो इस स्थान में एक अविस्मरणीय और अद्‌भुत दृश्य उपस्थिति हो जाता है। यहां सघन लतायेंइस स्थान को आच्छादित किये हुए हैं। अतएवं यह स्थान अत्यन्त रमणीक और मनमोहर है। प्रकृति ने मानों इसका निर्माण ही संसार की चिन्ताओं से मुक्त होकर अपने थके हुए मन और शरीर को विश्राम देने के लिए किया हो।

कर्नल टॉड ने मेनाल के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा कि महानाल के उपर एक ओर कगार की चट्टाने पर अजमेर और दिल्ली के स्वामी पृथ्वीराज ने मंदिर तथा भवनों का निर्माण किया था और दूसरी ओर चित्तौड़ के स्वामी समरसी के द्वारा निर्मित मंदिरऔर भवन थे। यहीवह स्थान था जहां दो महान् शक्तिशाली शासक अपने परिवारों सहित अकार कुछ दिनों तक रहा करते थे और आपस में स्नेहपूर्वक मिलते और मंत्रणा करते थे।

यहां यह शिव का विशाल एंव भव्य मंदिर हैं कालान्तर में मैनाल नाथ, सम्प्रदाय और भारतवर्ष में एक अतयन्त महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध स्थान बन गया है। यहां नाथ, योगी बहुत बड़ी संख्या में रहकर तपस्या और साधाना करते

थे। जन आवास से बहुत दूर यह नीरव, अत्यन्त शान्त और रमणीक स्थान वास्तव में आध्यात्मिक साधनों के लिए अत्यन्त उपयुक्त था। अतएव यह तनिक भी आश्चर्य की बात नहीं थी कि मैनाल भारतवर्ष में नाथ सम्प्रदाय का प्रमुख पीठ बन गया और यहां योगियों का समूह निवास करने लगा।

आज भी वहां जो मंदिर और योगियों के रहने के स्थान भग्न होने से बच गये और जो भग्नावशेष है, उससे सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि यह नाथ पीठ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और समृद्धशाली रहा होगा। अतः वास्तव में मैनाल एक दर्शनीय स्थल है।

***व्याख्याता**
विभाग संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय, बून्दी (राज.)
****व्याख्याता**
विभाग राजनीति विज्ञान
राजकीय कन्या महाविद्यालय, बून्दी (राज.)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. टॉड एल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग –2, 206, 594
2. बीजोलिया का किसान आंदोलन, पृष्ठ –2
3. बीजोलिया का किसान आंदोलन, पृष्ठ –3
4. बीजोलिया का शिलालेख श्लोक, सं0 – 51
5. बीजोलिया का शिलालेख श्लोक, सं0 – 24
6. बीजोलिया का शिलालेख श्लोक, सं0 – 28
7. बीजोलिया का शिलालेख श्लोक, सं0 – 66
8. भीलवाड़ा गजेटियर – 1980
9. बीजोलिया का किसान आंदोलन, पृष्ठ – 17
10. अपना राजस्थान पृष्ठ 37–40, राजपूताने का इतिहास–गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
11. राजपूताने का इतिहास पृष्ठ 15–16– गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
12. भीलवाड़ गजेटियर, बीजोलिया का किसान आंदोलन, पृष्ठ –3
13. बीजोलिया का किसान आंदोलन, पृष्ठ –3